19 june 2021 satta express.pdf - Read-only

आर.एन.आई.नं.- UPHIN/2009/44666

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

सत्ता एक्सप्रेस

डी.ए.वी.पी नई दिल्ली एवं राज्य सरकार द्वारा विज्ञापन मान्यता प्राप्त

वर्ष: 12 अंक : 245 कानपुर देहात, शनिवार 19 जून 2021 Email: sattaexpress@rediffmail.com

वैज्ञानिक विधि से प्याज की खेती कर ले सकते हैं एक हेक्टेयर में औसतन उपज 250 कुंतल– डॉ राम बटुक सिंह

दैनिक सत्ता एक्सप्रेस कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम मे सब्जी अनुभाग कल्याणपुर के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ राम बटुक सिंह ने किसानों के लिए खरीफ प्याज की वैज्ञानिक खेती विषय पर जानकारी दी है। उन्होंने बताया कि प्याज एक नकदी फसल है। जिसमें विटामिन सी, फास्फोरस आदि पौष्टिक तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं।प्याज का उपयोग सलाद, सब्जी, अचार एवं मसाले के रूप में किया जाता है। उन्होंने बताया कि हमारे देश में रबी एवं खरीफ दोनों ऋतुओ में प्याज उगाया जाता है। डॉ सिंह ने बताया कि प्याज शीतोष्ण जलवायु की फसल है। हल्के मौसम में इसकी अच्छी उपज प्राप्त की जा सकती है।उन्होंने बताया कि प्याज के अच्छे विकास के लिए 13 से 24 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान एवं 70प्रतिशत आर्द्रता की आवश्यकता होती है। प्याज के लिए दोमट एवं जलोढ़ मिट्टी जिसमें पर्याप्त कार्बनिक मात्रा एवं उचित जल निकास की सुविधा हो उचित रहती है।उन्होंने बताया कि प्याज की नर्सरी के लिए जून का महीना सर्वोत्तम होता है।एक हेक्टेयर प्याज की नर्सरी के लिए 10 किलोग्राम बीज पर्याप्त होता है। डॉ सिंह ने खरीफ की बुवाई हेतु उन्नतशील प्रजातियों के बारे में बताया कि एन–53,एग्रीफाउंड डार्क रेड, भीमा सुपर, भीमा डार्क रेड और अर्का कल्याण और अर्का निकेतन प्रमुख उन्नतशील प्रजातियां हैं। उर्वरकों के प्रबंधन हेतु उन्होंने बताया कि 250 कुंतल सड़ी हुई गोबर की खाद, 120 किलोग्राम डीएपी, 100 किलोग्राम यूरिया, 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट तथा 50 किलोग्राम बेंटोनाइट सल्फर प्रति हेक्टेयर रोपाई के पूर्व खेत में मिला दें। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि यदि ब्याज की वनस्पति की वृद्धि कम हो तो 19रू19रू19 पानी में घुलनशील उर्वरक 15, 30 एवं 45 दिनों बाद 200 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर दें। प्याज की फसल रोपाई के 90 से 120 दिन बाद परिपक्व हो जाती है।तब खुदाई कर ले। उन्होंने कहा कि यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से प्याज की खेती करते हैं तो एक हेक्टेयर क्षेत्रफल में औसतन 250 कुंतल प्याज की उपज प्राप्त होगी।जिससे किसान भाइयों को लाभ होगा।

राष्ट्रीय
सहारा
कानपुर • शनिवार • 19 जून • 2021

वैज्ञानिक विधि से खेती पर प्रति हेक्टेयर औसतन

250 कुंतल प्याज उत्पादन संभव

कानपुर (एसएनबी)। सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि के सब्जी अनुभाग कल्याणपुर के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. राम बटुक सिंह ने कहा कि खरीफ प्याज की खेती यदि वैज्ञानिक ढंग से की जाये तो प्रति हेक्टेयर औसतन 250 कुंतल तक प्याज उत्पादन संभव हो सकता है, जिससे किसान लाभान्वित हो सकते हैं। खरीफ की प्याज की फसल रोपाई के 90 से 120 दिन में परिपक्व होकर खुदाई योग्य हो जाती है। प्याज एक नकदी फसल है व यह आसानी से बाजार में बिक जाती है।

डॉ.सिंह ने बताया कि प्याज शीतोष्ण जलवायु की फसल है।

हल्के मौसम में इसकी अच्छी उपज प्राप्त की जा सकती है। हमारे यहां प्लाज रबी व खरीफ दोनों ही ऋतुओं में उगाया जाता है। प्याज के लिए दोमट एवं जलोढ़ मिट्टी जिसमें पर्याप्त कार्बनिक मात्रा एवं उचित जल निकास की सुविधा हो उचित रहती है। प्याज के अच्छे विकास के लिए 13 से 24 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान एवं 70 फीसद आर्द्रता की आवश्यकता होती है। प्याज की नर्सरी के लिए जून का महीना सर्वोत्तम रहता है। एक हेक्टेयर प्याज की नर्सरी के लिए 10 किग्रा बीज पर्याप्त होता है। उन्होंने खरीफ प्याज की बुवाई हेतु उन्नतशील प्रजातियों की जानकारी दी। बताया कि एन-53, एग्रीफाउंड डार्क रेड, भीमा सुपर, भीमा डार्क रेड व अर्का कल्याण व अर्का निकेतन प्रमुख प्याज की प्रजातियां हैं। उर्वरकों के प्रबंधन पर उन्होंने कहा कि 250 कुंतल गोबर की सड़ी हुई खाद , 120 किग्रा डीएपी, 100 किग्रा यूरिया, 25 किग्रा जिंक सल्फेट तथा 50 किग्रा बेंटोनाइट सल्फर प्रति हेक्टेयर रोपाई के पूर्व खेत में मिला दें। यदि प्याज की वनस्पति की वृद्धि कम हो तो 19: 19: 19 के अनुपात में पानी में घुलनशील उर्वरक 15, 30 एवं 45 दिनों बाद 200 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। प्याज एक नकदी फसल है। इसमें विटामिन सी, फास्फोरस आदि पौष्टिक तत्व प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। प्याज का उपयोग सलाद, सब्जी, अचार एवं मसाले के रूप में किया जाता है। भारतीय भोजन का यह एक अभिन्न हिस्सा है।

सीएसए के वैज्ञानिक की खरीफ प्याज उत्पादन पर सलाह

90 से 120 दिनों में पककर तैयार होती है खरीफ की प्याज

हिन्दी दैनिक

R.N.I.:UPHIN/2012/42725

हिन्दुस्तान का इतिहास

कानपुर से प्रकाशित

वर्ष : 10 अंक : 56 हिन्दी दैनिक कानपुर शनिवार,19 जून ,2021 पृष्ठ : 8 मूल्य : 2 रुपये

खरीफ प्याज की वैज्ञानिक खेती: डॉ राम बदुक सिंह

कानपुर– हिन्दुस्तान का इतिहास –– चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के सब्जी अनुभाग कल्याणपुर के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ राम बटुक सिंह ने किसानों के लिए खरीफ प्याज की वैज्ञानिक खेती विषय पर जानकारी दी है उन्होंने बताया कि प्याज एक नकदी फसल है जिसमें विटामिन सी, फास्फोरस आदि पौष्टिक तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं प्याज का उपयोग सलाद, सब्जी, अचार एवं मसाले के रूप में किया जाता है उन्होंने बताया कि हमारे देश में रबी एवं खरीफ दोनों ऋतुओ में प्याज उगाया जाता है डॉ सिंह ने बताया कि प्याज शीतोष्ण जलवायु की फसल है हल्के मौसम में इसकी अच्छी उपज प्राप्त की जा सकती है उन्होंने बताया कि प्याज के अच्छे विकास के लिए 13 से 24 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान एवं 70: आर्द्रता की आवश्यकता होती है प्याज के लिए दोमट एवं जलोढ़ मिट्टी जिसमें पर्याप्त कार्बनिक मात्रा एवं उचित जल निकास की सुविधा हो उचित रहती है उन्होंने बताया कि प्याज की नर्सरी के लिए जून का महीना सर्वोत्तम होता है एक हेक्टेयर प्याज की नर्सरी के लिए 10 किलोग्राम बीज पर्याप्त होता है डॉ सिंह ने खरीफ की बुवाई हेतु उन्नतशील प्रजातियों के बारे में बताया कि एन–53, एग्रीफाउंड डार्क रेड, भीमा सुपर, भीमा डार्क रेड और अर्का कल्याण और अर्का निकेतन प्रमुख उन्नतशील प्रजातियां हैं उर्वरकों के प्रबंधन हेतु उन्होंने बताया कि 250 कुंतल सड़ी हुई गोबर की खाद, 120 किलोग्राम डीएपी, 100 किलोग्राम यूरिया, 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट तथा 50 किलोग्राम बेंटोनाइट सल्फर प्रति हेक्टेयर रोपाई के पूर्व खेत में मिला दें उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि यदि प्याज की वनस्पति की वृद्धि कम हो तो 19रू19रू19 पानी में घुलनशील उर्वरक 15, 30 एवं 45 दिनों बाद 200 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर दें प्याज की फसल रोपाई के 90 से 120 दिन बाद परिपक्व हो जाती है तब खुदाई कर ले उन्होंने कहा कि यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से प्याज की खेती करते हैं तो एक हेक्टेयर क्षेत्रफल में औसतन 250 कुंतल प्याज की उपज प्राप्त होगी जिससे किसान भाइयों को लाभ होगा

R.N.I. NO UPHIN@ 2013/53179

कानपुर नगर कानपुर देहात उन्नाव हमीरपुर कन्नौज इटावा उरई जालौन लखनऊ आगरा मथुरा औरैया इलाहाबाद से एक साथ प्रसारित

वर्ष - 8
अंक - 213
कानपुर
शनिवार, 19
जून 2021
पृष्ठ - 4
मूल्य 1:00

2 गज की दूरी, मास्क है जरूरी

सोशल रिपोर्टर

हिन्दी दैनिक

खरीफ प्याज की वैज्ञानिक खेती- डॉ राम बटुक सिंह

मनोज मिश्रा

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज सब्जी अनुभाग कल्याणपुर के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ राम बटुक सिंह ने किसानों के लिए खरीफ प्याज की वैज्ञानिक खेती विषय पर जानकारी दी है। उन्होंने बताया कि प्याज एक नकदी फसल है। जिसमें विटामिन सी, फास्फोरस आदि पौष्टिक तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। प्याज का उपयोग सलाद, सब्जी, अचार एवं मसाले के रूप में किया जाता है।

उन्होंने बताया कि हमारे देश में रबी एवं खरीफ दोनों ऋतुओं में प्याज उगाया जाता है। डॉ सिंह ने बताया कि प्याज शीतोष्ण जलवायु की फसल है। हल्के मौसम में इसकी अच्छी उपज प्राप्त की जा सकती है उन्होंने बताया कि प्याज के अच्छे विकास के लिए 13 से 24 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान एवं 70: आर्द्रता की आवश्यकता होती है। प्याज के लिए दोमट एवं जलो? मिट्टी जिसमें पर्याप्त कार्बनिक मात्रा एवं उचित

जल निकास की सुविधा हो उचित रहती है उन्होंने बताया कि प्याज की नर्सरी के लिए जून का महीना सर्वोत्तम होता है एक हेक्टेयर प्याज की नर्सरी के लिए 10 किलोग्राम बीज पर्याप्त होता है। डॉ सिंह ने खरीफ की बुवाई हेतु उन्नतशील प्रजातियों के बारे में बताया कि एग्-53,एग्रीफाउंड डार्क रेड, भीमा सुपर, भीमा डार्क रेड और अर्का कल्याण और अर्का निकेतन प्रमुख उन्नतशील प्रजातियां हैं। उर्वरकों के प्रबंधन हेतु उन्होंने बताया कि 250 क्विंटल सड़ी हुई गोबर की खाद, 120 किलोग्राम डीएपी, 100 किलोग्राम यूरिया, 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट तथा 50 किलोग्राम बेंटोनाइट सल्फर प्रति हेक्टेयर रोपाई के पूर्व खेत में मिला दें। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि यदि प्याज की वानस्पति की वृद्धि कम हो तो 19: 19: 19 के अनुपात में पानी में घुलनशील उर्वरक 15, 30 एवं 45 दिनों बाद 200 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर दें। प्याज की फसल रोपाई के 90 से 120 दिन बाद परिपक्व हो जाती है तब खुदाई कर ले। उन्होंने कहा कि यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से प्याज की खेती करते हैं तो एक हेक्टेयर क्षेत्रफल में औसतन 250 क्विंटल प्याज की उपज प्राप्त होगी जिससे किसान भाइयों को लाभ होगा।

19 june_jan express.pdf - Read-only

जन एक्सप्रेस

/janexpresslive

लखनऊ, शनिवार, 19 जून, 2021, वर्ष : 12, अंक : 245, पृष्ठ : 12, मूल्य ₹ 3.00/-

www.janexpresslive.com/epaper

विटामिन सी व फास्फोरस जैसे पौष्टिक तत्वों से भरपूर रहता है प्याज

जन एक्सप्रेस संवाददाता

कानपुर नगर। प्याज शीतोष्ण जलवायु की फसल है जिसे हमारे देश में रबी एवं खरीफ दोनों ऋतु में उगाया जाता है यह एक नगदी फसल है जिसमें विटामिन सी, फास्फोरस आदि पौष्टिक तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं प्याज के अच्छे विकास के लिए 13 से 24 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान और 70 प्रतिशत आद्रता की आवश्यकता होती है इसके लिए दोमट और जलोढ़ मिट्टी जिसमें पर्याप्त कार्बनिक मात्रा व उचित जल निकास की सुविधा हो उचित रहती है प्याज की नर्सरी के लिए सबसे अच्छा महीना जून का होता है। यह बात सीएसएयू के सब्जी अनुभाग कल्याणपुर के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. राम बटुक सिंह ने किसानों के लिए खरीफ प्याज की वैज्ञानिक खेती विषय पर जानकारी देते हुए कही। उन्होंने बताया कि प्याज की वनस्पति की वृद्धि कम होने पर 19:19:19 पानी में घुलनशील उर्वरक 15, 30 एवं 45 दिनों बाद 200 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करे इसकी फसल रोपाई के 90 से 120 दिन बाद परिपक्व हो जाती है तब खुदाई करनी चाहिए इसके साथ ही उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक विधि से प्याज की खेती करने पर एक हेक्टेयर क्षेत्रफल में औसतन 250 कुंटल प्याज की उपज प्राप्त होगी जिससे किसानों को लाभ होगा। डॉ. सिंह ने बताया कि एन-53, एग्रीफाउंड डार्क रेड, भीमा सुपर, भीमा डार्क रेड और अर्का कल्याण और अर्का निकेतन प्रमुख उन्नतशील प्रजातियां हैं। उर्वरकों के प्रबंधन के लिए उन्होंने बताया कि 250 कुंतल सड़ी हुई गोबर की खाद, 120 किलोग्राम डीएपी, 100 किलोग्राम यूरिया, 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट तथा 50 किलोग्राम बेंटोनाइट सल्फर प्रति हेक्टेयर रोपाई के पूर्व खेत में मिला देनी चाहिए।

उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमत टुडे

RNI-NO-UTTBIL/2007/20700

3 चमोली में उफान पर नदियां, अलकनंदा खतरे के निशान से 30 सेंटीमीटर नीचे

वर्ष:12 | अंक:170 | देहरादून, शुक्रवार, 18 जून, 2021 | पृष्ठ:08 | मूल्य:2/रु. प्रति

खरीफ प्याज की वैज्ञानिक खेती: डॉ राम बटुक सिंह

दीपक गौड़ (जनमत टुडे)

कानपुर: चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के सब्जी अनुभाग कल्याणपुर के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ राम बटुक सिंह ने किसानों के लिए खरीफ प्याज की वैज्ञानिक खेती विषय पर जानकारी दी है उन्होंने बताया कि प्याज एक नकदी फसल है जिसमें विटामिन सी, फास्फोरस आदि पौष्टिक तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं प्याज का उपयोग सलाद, सब्जी, अचार एवं मसाले के रूप में किया जाता है उन्होंने बताया कि हमारे देश में रबी एवं खरीफ दोनों ऋतुओं में प्याज उगाया जाता है डॉ सिंह ने बताया कि प्याज शीतोष्ण जलवायु की फसल है हल्के मौसम में इसकी अच्छी उपज प्राप्त की जा सकती है उन्होंने बताया कि प्याज के अच्छे विकास के लिए 13 से 24 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान एवं 70: आर्द्रता की आवश्यकता होती है प्याज के लिए दोमट एवं जलोढ़ मिट्टी जिसमें पर्याप्त कार्बनिक मात्रा एवं उचित जल निकास की सुविधा हो उचित रहती है उन्होंने बताया कि प्याज की नर्सरी के लिए जून का महीना सर्वोत्तम होता है एक हेक्टेयर प्याज की नर्सरी के लिए 10 किलोग्राम बीज पर्याप्त होता है डॉ सिंह ने खरीफ की बुवाई हेतु उन्नतशील प्रजातियों के बारे में बताया कि एन–53, एग्रीफाउंड डार्क रेड, भीमा सुपर, भीमा डार्क रेड और अर्का कल्याण और अर्का निकेतन प्रमुख उन्नतशील प्रजातियां हैं उर्वरकों के प्रबंधन हेतु उन्होंने बताया कि 250 कुंतल सड़ी हुई गोबर की खाद, 120 किलोग्राम डीएपी, 100 किलोग्राम यूरिया, 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट तथा 50 किलोग्राम बैंटोनाइट सल्फर प्रति हेक्टेयर रोपाई के पूर्व खेत में मिला दें उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि यदि प्याज की वनस्पति की वृद्धि कम हो तो 19रु19रु19 पानी में घुलनशील उर्वरक 15, 30 एवं 45 दिनों बाद 200 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर दें प्याज की फसल रोपाई के 90 से 120 दिन बाद परिपक्व हो जाती है तब खुदाई कर ले उन्होंने कहा कि यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से प्याज की खेती करते हैं तो एक हेक्टेयर क्षेत्रफल में औसतन 250 कुंतल प्याज की उपज प्राप्त होगी जिससे किसान भाइयों को लाभ होगा।